एकलव्य का प्रकाशन

नन्हे चूज़े की दोस्त...

एक चित्रकथा

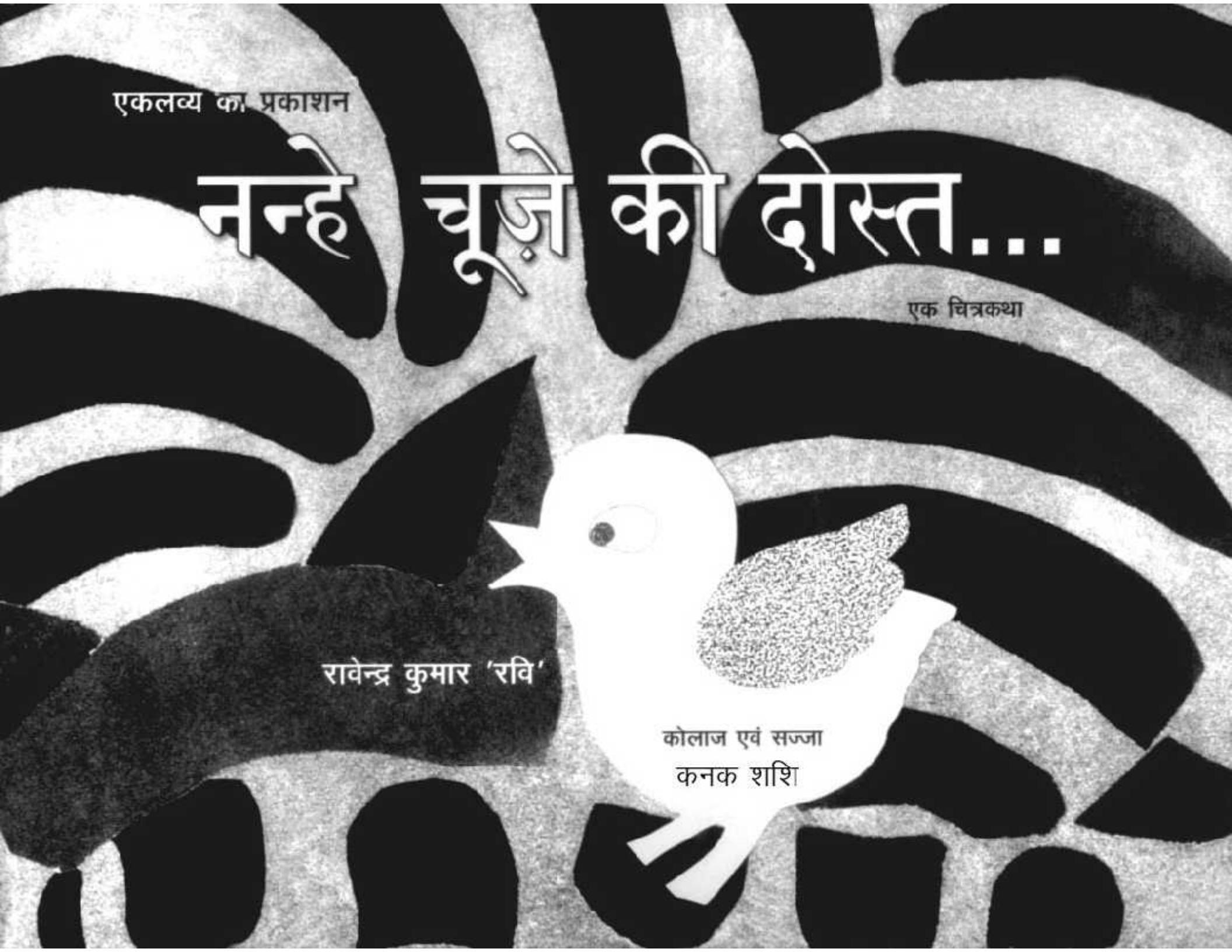

रावेन्द्र कुमार 'रवि'

कोलाज एवं सज्जा
कनक शशि

नन्हे चूज़े की दोस्त...

एक चित्रकथा

रावेन्द्र कुमार 'रवि'

कोलाज एवं सज्जा
कनक शशि

एकलव्य का प्रकाशन

नन्हे चूज़े की दोस्त

एक चित्रकथा

रावेन्द्र कुमार 'रवि'

कोलाज एवं सज्जा - विप्लव शशि

© एकलव्य/ रावेन्द्र कुमार रवि/ विप्लव शशि

नवम्बर 2003/ 3000 प्रतियाँ

जून 2007/ 5000 प्रतियाँ

आर्ट कार्ड (कवर) पर प्रकाशित

ISBN: 81-87171-55-3

प्रकाशक: एकलव्य

ई-7/एचआईजी 453, अरेरा कॉलोनी

भोपाल - 462016 म.प्र.

फोन: (0755) 246 3380

फैक्स: (0755) 246 1703

www.eklavya.in

सम्पादकीय: books@eklavya.in

किताबें मँगवाने के लिए: pitara@eklavya.in

मुद्रक भण्डारी ऑफसेट, भोपाल, फोन: 246 3769

एकलव्य : एक परिचय

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है। जो पिछले कई वर्षों से शिक्षा एवं जनविज्ञान के क्षेत्र में काम कर रही है।

एकलव्य का मुख्य उद्देश्य है ऐसी शिक्षा जो बच्चे व उसके पर्यावरण से जुड़ी हो, जो खेल, गतिविधि व सृजनात्मक पहलुओं पर आधारित हो। एकलव्य ने अपने काम के दौरान पाया कि स्कूली प्रयास तभी सार्थक हो सकते हैं जब बच्चों को स्कूली समय के बाद घर में भी रचनात्मक गतिविधियों के साधन उपलब्ध हों। किताबें तथा पत्रिकाएँ ऐसे साधनों का एक अहम हिस्सा हैं।

पिछले कुछ वर्षों में एकलव्य ने अपने काम का विस्तार प्रकाशन के क्षेत्र में भी किया है। बच्चों की पत्रिका *चकमक* के अलावा *स्रोत* (विज्ञान एवं टेक्नोलॉजी फीचर) तथा *संदर्भ* (शैक्षिक पत्रिका) एकलव्य के नियमित प्रकाशन हैं। शिक्षा, जनविज्ञान एवं बच्चों के लिए सृजनात्मक गतिविधियों के अलावा विकास के व्यापक मुद्दों से जुड़ी किताबें, पुस्तिकाएँ, सामग्री आदि भी एकलव्य ने विकसित एवं प्रकाशित की है।

एक थी बिल्ली। चमकीली आँखों वाली गोल-मटोल।
काली-काली पूँछ थी उसकी और सफेद-सफेद मूँछ।
देखने में वह बहुत अच्छी लगती थी - शेर की मौसी जो ठहरी!

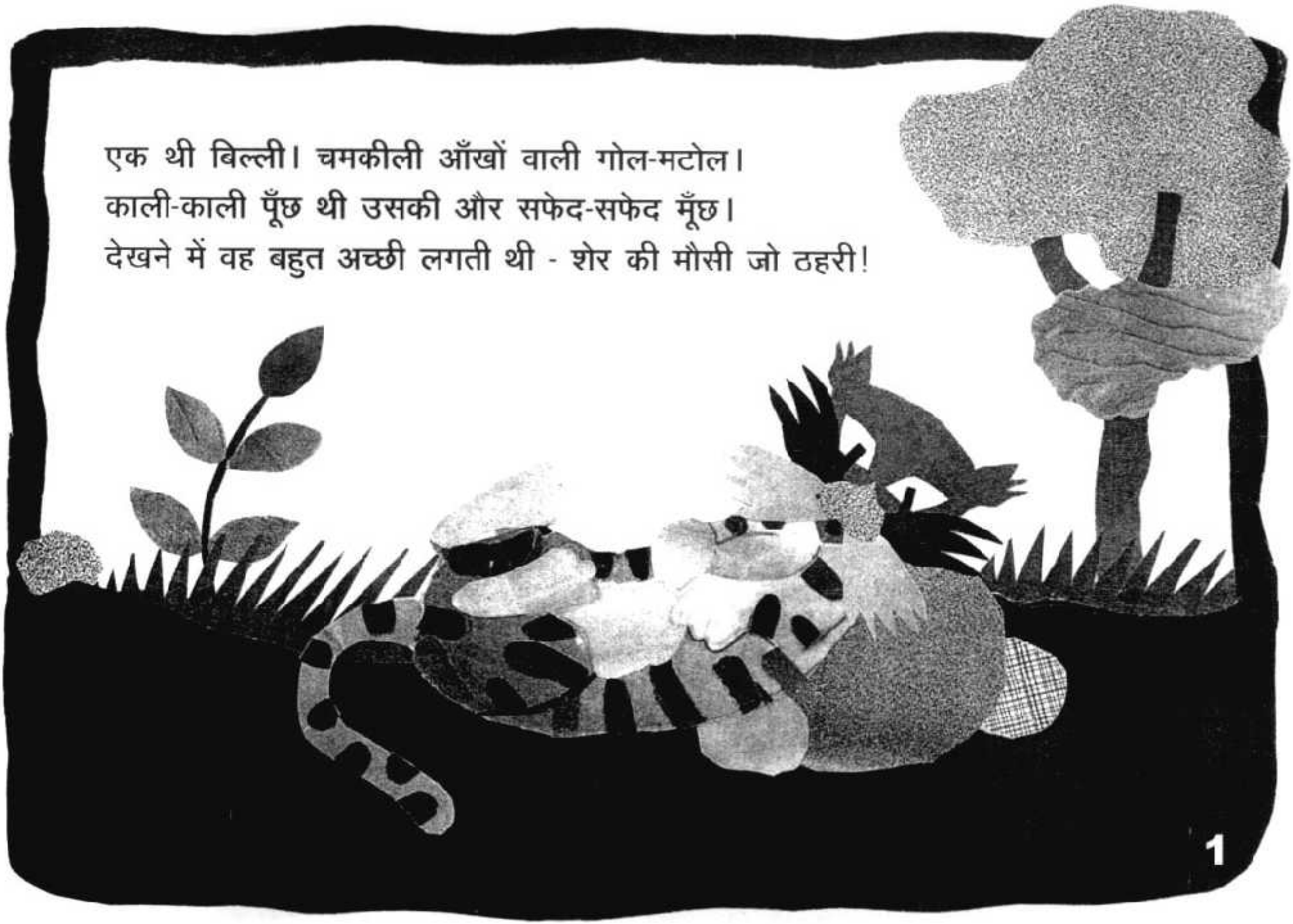

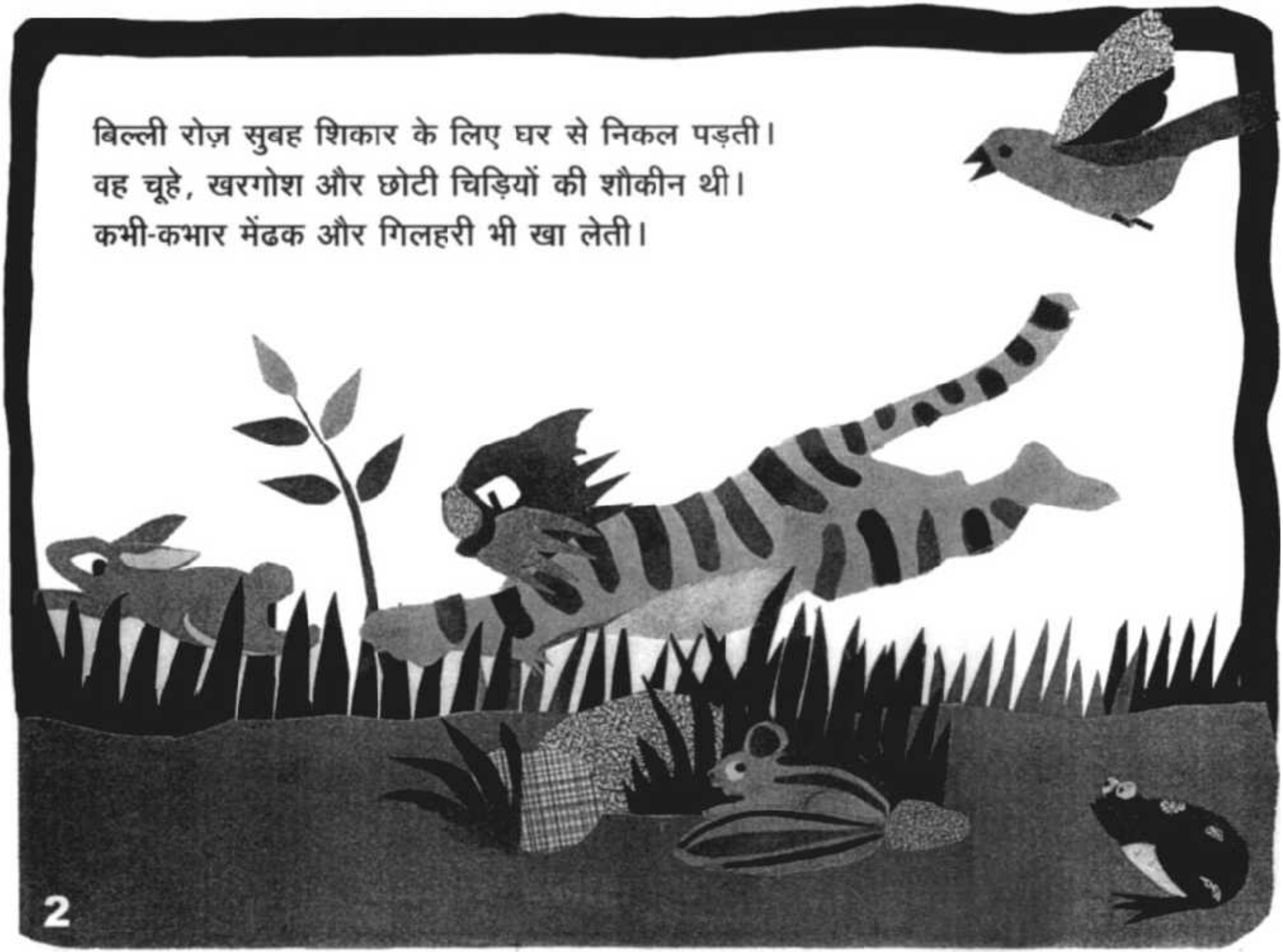

बिल्ली रोज़ सुबह शिकार के लिए घर से निकल पड़ती।
वह चूहे, खरगोश और छोटी चिड़ियों की शौकीन थी।
कभी-कभार मेंढक और गिलहरी भी खा लेती।

एक सुबह एक नन्हा-मुन्ना, नरम रूई के गोले जैसा चूज़ा अकेला खेल रहा था।
वह उसे पकड़ने के लिए दबे पाँव उसकी ओर बढ़ने लगी।
जब वह उसके पास पहुँची, तो चूज़ा उसे देखकर ज़रा-सा भी नहीं डरा।

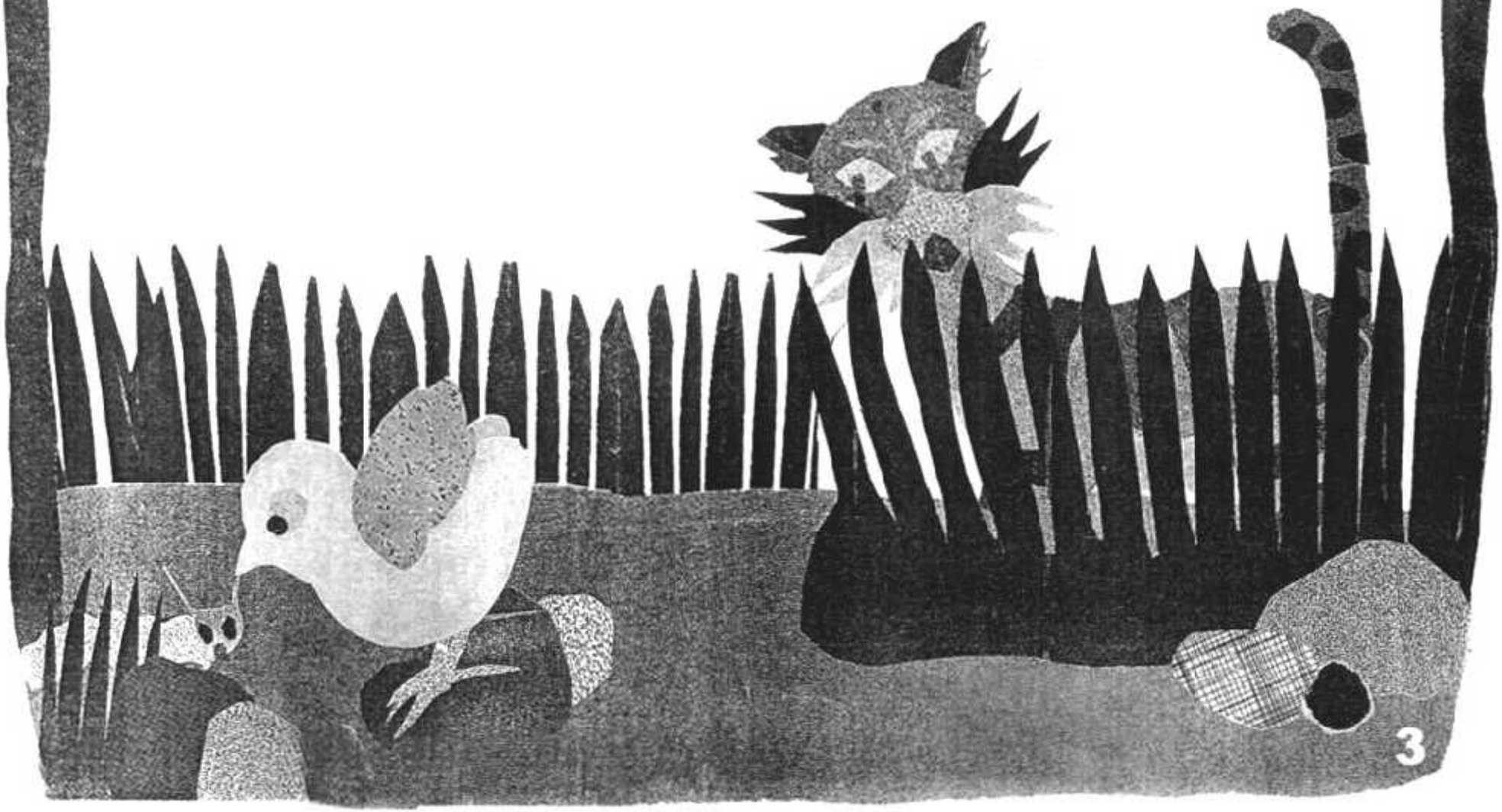

चूज़े ने पहली बार बिल्ली देखी थी। वह उसे बहुत अच्छी लगी।
चूज़ा किलकारियाँ भरने लगा। चूँ-चूँ-चूँ-चूँ करके बिल्ली के चारों तरफ घूमने लगा।
वह कभी बिल्ली की पूँछ पकड़ने की कोशिश करता तो कभी उसकी मूँछ।

बिल्ली को भी उसकी शरारतें बहुत मन भायीं।
वह भी म्याऊँ-म्याऊँ करके चूज़े के साथ खेलने लगी।

चूज़ा और बिल्ली खेलने में मस्त थे। तभी मुर्गी माँ वहाँ आई।
वह अपने बच्चे को बिल्ली के साथ खेलते देख घबरा गई।

मुर्गी समझ रही थी कि बिल्ली चूज़े को खा जाएगी। घबराहट में वह रोने लगी।
बिल्ली ने सोचा कि मुर्गी को समझाना चाहिए कि ऐसी कोई बात नहीं है।
बिल्ली मुर्गी की ओर बढ़ी।
चूज़ा उचककर बिल्ली की पीठ पर बैठ गया।
अब तो मुर्गी और भी डर गई।

बिल्ली ने मुर्गी से कहा, 'नहीं, नहीं, डरो मत! बिल्कुल भी मत डरो।
मैं इसे नहीं खाऊँगी। यह तो बहुत प्यारा है। मुझे भी इससे प्यार हो गया है।'
चूज़ा कूदकर माँ के पास आ गया। मुर्गी की जान में जान आई।
मुर्गी ने उसे जी भर के लाड़ किया।

बिल्ली अब भी वहीं थी। चूज़ा दौड़कर फिर से बिल्ली के पास गया और बोला, 'आज से तुम मेरी दोस्त और मैं तुम्हारा।'

बिल्ली को बहुत अच्छा लगा।
फिर तो धीरे-धीरे सब उसके दोस्त बन गए।

एकलव्य द्वारा प्रकाशित अन्य चित्रकथाएँ

बिल्ली के बच्चे

नाव चली

रूसी-पूसी

भालू ने खेली फुटबॉल

नटखट गधा

चीचीबाबा के भाई

छुटकी उल्ली

तुमने मेरा अण्डा तो नहीं देखा?

मैंने एक लाइन बनाई

ओ हरियल पेड़...

ISBN: 978-81-87171-55-3

एकलव्य

मूल्य: ₹ 20.00

A01901H